B.A I Hons Paper Ist
Topic - Ramanuja's Illusion

Q: Explain Clearly Ramanuja's theory of illusion

Ans:

भारतीय दर्शन के विभिन्न नास्तिक तथा आस्तिक संप्रदायों में भ्रम-सम्बन्धी अवधारणा की विस्तृत विवेचना हुई है और भ्रम के स्वरूप तथा उसके कारण की गहरी छानबीन भी की गई है। फलतः अनेक सिद्धांत विकसित हुये हैं। माध्यमिक शून्यवाद 'शून्यख्यातिवाद', योगाचार विज्ञानवाद का 'आत्मख्यातिवाद', न्याय-वैशेषिक का 'अन्यथाख्यातिवाद' प्रभाकर का 'अख्याति-वाद' कुमारिल का 'विपरीत-ख्यातिवाद' शांकराचार्य का 'अनिर्वचनीय ख्यातिवाद' तथा रामानुज का 'सत्-ख्यातिवाद' भ्रम-विचार के पोषक तत्व हैं। यद्यपि सभी मतों की अपनी-अपनी विशेषता है और भ्रम के स्वरूप के संबंध में मतैक्य नहीं है तथापि प्रायः सभी मानते हैं कि भ्रम अप्रमा का एक रूप है और इसमें वस्तु का अयथार्थ ज्ञान होता है। इसमें वस्तुओं को उन गुणों से युक्त अनुभव किया जाता है जो गुण वस्तुतः उसमें नहीं होते हैं, बल्कि वे गुण तो अन्यत्र होते हैं। रात के अन्धेरे में रस्सी को सर्प समझना भ्रम का एक प्रचलित उदाहरण है।

रामानुज के भ्रम-विचार को सत्ख्याति-वाद (यथार्थख्यातिवाद) कहा जाता है और यह विशिष्टाद्वैत वेदान्त की ज्ञानमीमांसा का प्रमुख अंग है। इनके अनुसार सभी ज्ञान यथार्थ है और मिथ्या ज्ञान नाम की कोई वस्तु नहीं है। जिस विषय का ज्ञान होता है वह सत् है। ज्ञान के विषय को मिथ्या मानना भ्रमात्मक है। यदि जलती में रात के सामने में रस्सी सर्प के रूप में दिखाई पड़ती है तो रस्सी में सर्प का अंश है। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि रस्सी इसलिए सर्प प्रतीत होती है कि रस्सी में सर्पत्व के लक्षण निहित है। सर्प सर्वथा मिथ्या नहीं है। उसीप्रकार, यदि सीप चाँदी के रूप में आभासित होता है तो निस्संदेह सीप में चाँदी का अंश विद्यमान है। वास्तव में, सीप इसलिए चाँदी के रूप में ज्ञात होती है

कि सीप में चाँदीत्व के लक्षण मौजूद होते हैं। अतः सर्प - रज्जू भ्रम तथा सीप - चाँदी भ्रम में असत् पदार्थ की प्रतीति नहीं होती। भ्रमों की उत्पत्ति के मूल उपादान विषयों में ही रहते हैं। जो तीनों तत्व तेज, जल तथा पृथ्वी सर्प में विद्यमान हैं या चाँदी में वर्तमान हैं, वे ही तत्त्व रस्सी में भी हैं या सीप में भी हैं। अतः रामानुज का 'त्रिवृत्करण' या 'पंचीकरण' का सिद्धान्त सत्ख्यातिवाद को जन्म देने में सक्षम सिद्ध हुआ है।

वास्तव में, रामानुज के सत्ख्यातिवाद की पुष्टि प्राचीन (Earlier) सांख्य तथा प्रभाकर मीमांसा के 'अख्यातिवाद' से की जा सकती है। प्रभाकर के मतानुसार, प्रत्येक ज्ञान सत्य होता है और कोई ज्ञान असत्य नहीं होता। जिसे हम भ्रम कहते हैं, उसमें भी दो तरह के ज्ञानों का सम्मिश्रण पाया जाता है। एक लम्बी टेढ़ी-मेढ़ी सी वस्तु का प्रत्यक्ष ज्ञान और पूर्वकाल में प्रत्यक्ष हुए सर्प की स्मृति-ज्ञान ये दोनों ही सत्य हैं। केवल स्मृति-दोष से हम इतना भूल जाते हैं कि वह सर्प स्मृति का विषय है, प्रत्यक्ष का नहीं। इसलिए हम रज्जू के प्रति वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा सर्प के प्रति व्यवहार करना चाहिए, यहाँ दोष हमारे व्यवहार में है। स्मृति प्रमोष अर्थात् स्मरण के लोप के कारण विवेकाग्रह अर्थात् भेद के ज्ञान का अभाव हो जाता है। यह दोष केवल ज्ञान का अभाव मात्र है। इसलिए इसमें भ्रम की सत्ता को अस्वीकार किया जाता है। सत्ता तो केवल ज्ञान की है, भ्रम की नहीं। अनुभव तथा स्मृति के भेद-ज्ञान के अभाव में भ्रम की प्रतीति होती है। ज्ञान और भ्रम (Truth and Error) में अन्तर सिर्फ व्यावहारिक है, तार्किक नहीं।

किन्तु इस समानता के बावजूद दोनों में अन्तर भी है। जहाँ प्रभाकर प्रत्यक्ष सीप तथा स्मृति चाँदी के भेद-ज्ञान के अभाव को भ्रम का कारण मानते हैं वहाँ रामानुज

स्वीकार करते हैं। इसके अतिरिक्त प्रभाकर ज्ञान के व्यवहारिक पक्ष पर पूर्ण जोर देते हैं और मानते हैं कि ज्ञान की उपादेयता सूक्ष्म व्यवहार का मानदण्ड है, जबकि रामानुज ज्ञान को मात्र कर्मफल से नहीं जोड़ते हैं, बल्कि वे ज्ञान को स्वयं प्रकाशवान और चैतन्यस्वरूप मानते हैं। (Ramanuja values knowledge more for the light it brings than for the fruits it bears.)

इसप्रकार, स्पष्ट है कि रामानुज के दर्शन में भ्रम का एक विशिष्ट अर्थ है जिसे संक्षेप में इसप्रकार रखा जा सकता है " Error is non-apprehension and not misapprehension. Error is only partial truth. Cognition as such is never invalid. Error Or means Only imperfect and incomplete truth. The way to remove error is to acquire more perfect and complete knowledge. There is no subjective or ideal element in error. Truth Only supplements error and does cancel it."

रामानुज द्वारा प्रस्थापित सत्ख्यातिवाद बौद्ध-दर्शन के शून्यख्यातिवाद तथा आत्मख्यातिवाद का विरोधी है। माध्यमिक सम्प्रदाय का शून्यख्यातिवाद मानता है कि शून्य ही रज्जू सर्प के रूप में दिखाई पड़ता है। योगाचार संप्रदाय का आत्माख्यातिवाद के अनुसार विज्ञान के रूप में रज्जू तथा सर्प दोनों सत्य है, परन्तु बाह्य पदार्थ के रूप में दोनों असत्य है। इसप्रकार, स्पष्ट है कि एक ओर सत्ख्यातिवाद जहाँ भ्रम को सत्यता के धरातल पर ले आता है, वहाँ शून्यख्यातिवाद तथा आत्मख्यातिवाद भ्रम की सत्यता को ही समाप्त कर देता है।

पुनः रामानुज का सत्ख्यातिवाद कुमारिल भट्ट के 'विपरीतख्यातिवाद' का भी विरोधी सिद्धान्त है। विपरीतख्यातिवाद के अनुसार मिथ्या विषय भी प्रत्यक्ष-सा भासित होने लगता है। भ्रम की अवस्था में विषय का विपरीत अनुभव होता है। युक्ति

शुक्ति का रजत के रूप में तथा रज्जू का सर्प के रूप में 'विपरीत ख्याति' है। शुक्ति तथा रजत, रस्सी तथा सर्प दोनों का अपने - अपने स्थान पर ज्ञान सत्य है। किन्तु शुक्ति रजत के रूप में, रस्सी का सर्प के रूप में ज्ञान असत्य है। अतः भ्रम तो शुक्ति तथा रजत, रस्सी तथा सर्प में संसर्ग से उत्पन्न होता है। यदि पहले देखी गई चाँदी का वर्तमान में दिखनेवाली सीपी के साथ सम्बन्ध न जोड़ें, तो भ्रम उत्पन्न नहीं होगा। भ्रम में संबंधित विषय का कारणगत - दोष है। इसलिए भ्रम असद् वस्तु का सद् ज्ञान नहीं है, वरन् सद् वस्तु का विपरीत ज्ञान है। अतः कहा जा सकता है कि जहाँ कुमारिल भ्रम का वस्तु का विपरीत ज्ञान मानते हैं वहाँ रामानुज भ्रम को ज्ञान का अभाव बतलाते हैं। दूसरे शब्दों में रामानुज भ्रम को non- apprehension मानते हैं, पर कुमारिल भ्रम को misapprehension स्वीकार करते हैं।

कुमारिल भट्ट के विपरीत ख्यातिवाद की तरह न्याय- वैशेषिक का अन्यथाख्यातिवाद भी रामानुज के सत्ख्यातिवाद की पुष्टि करता है। अन्यथाख्यातिवाद के अनुसार " Error is due to wrong synthesis of the presented and the represented object." अर्थात् भ्रम उपस्थित विषय तथा स्मृतिजन्य विषय का गलत समन्वय है। इसमें स्मृति का संस्कार इतना प्रबल हो जाता है कि वह प्रत्यक्ष - सा जान पड़ता है। सीप का ज्ञान (Presented object) दूसरे रूप में हो रहा है और सीप में चाँदी (represented object) अन्यत्र अस्तित्वान है। सीप तथा चाँदी दोनों अलग- अलग सत्य है पर दोनों का समन्वय असत्य है। वात्स्यायन के अनुसार, " What is set aside by true knowledge is the wrong apprehension, not the object." उद्योतकर का कहना है - " The object all the while remains what it actually is .... the error lies in the cognition." गंगेश का विचार है कि "A real object is mistaken as another real object which exists else-

अंशतः सत्य है तो कोई एक अंश असत्य हो जाता है। पुनः कहा जा सकता है कि यदि रस्सी में सर्प का प्रत्यक्ष बोध वास्तविक है तो रस्सी में रस्सी का प्रत्यक्ष बोध को क्या कहा जायेगा? इसका समुचित उत्तर सत्ख्यातिवाद में नहीं मिलता। अन्त में, आपत्ति की जाती है कि यदि रस्सी में सर्प का प्रत्यक्ष बोध यथार्थ है तो सभी लोगों को ऐसा प्रत्यक्ष बोध होना चाहिए, परन्तु ऐसा होता नहीं है। रात के अन्धेरे में एक ठूंठ वृक्ष किसी को चोर और दूसरे को प्रेत लग सकता है। ऐसी स्थिति में सत्ख्यातिवाद का कोई औचित्य नहीं रह जाता है।

<u>Conclusion</u>:— अन्य दार्शनिक सिद्धान्तों की भांति रामानुज का सत्ख्यातिवाद भी पूर्णतः त्रुटिरहित नहीं है। इसके बावजूद इसकी विशेषता इस बात में है कि यहाँ भ्रम की सत्यता में विश्वास किया जाता है, भ्रम को सत्यता के धरातल पर लाया जाता है। भ्रम का प्रभाव ज्ञान की अपेक्षा हमारे व्यवहार पर अधिक पड़ता है। सामान्यतः यही नियम है कि प्रत्येक ज्ञान सत्य का दर्शन कराता है। इसी विश्वास पर हमारा दैनिक जीवन चल सकता है, कभी-कभी ही इस नियम का अपवाद भी हो सकता है जिसे हम भ्रम का नाम देते हैं। अतः सत्ख्यातिवाद भ्रम की एक अच्छी ~~[illegible]~~ व्याख्या प्रस्तुत करता है।